कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 11, (अप्रैल, 2024)
पृष्ठ संख्या 44–46

जीविकोपार्जन हेतु लाख की खेती

सूरज सोनी[1],हर्षित गुप्ता[2], एवं समीर कुमार सिंह[1],
[1]कीट विज्ञान विभाग
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या
[2]कीट विज्ञान प्रयोगशाला
भाकृअनुप– भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत।
Email Id: – surajsoni5001@gmail.com

लाख, या लाह संस्कृत के लाक्षा शब्द से व्युत्पन्न समझा जाता है। संभवतः लाखों कीड़ों से उत्पन्न होने के कारण इसका नाम लाक्षा पड़ा था। लाख एक प्राकृतिक राल है बाकी सब राल कृत्रिम हैं। इसी कारण इसे प्रकृति का वरदान कहते हैं। लाख के कीट अत्यन्त सूक्ष्म होते हैं तथा अपने शरीर से लाख उत्पन्न करके हमें आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक भाषा में लाख को लेसिफर लाखा–कहा जाता है। लाख–शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के लक्ष शब्द से हुई है, संभवतः इसका कारण मादा कोष से अनगिनत (अर्थात् लक्ष) शिशु कीड़ों का निकलना है। लगभग 34 हजार लाख के कीड़े एक किग्रा. रंगीन लाख तथा 14 हजार 4 सौ लाख के कीड़े एक किग्रा. कुसुमी लाख पैदा करते हैं।

वैदिक कल से लाख कीट और उसके मेजबान पौधे का वर्णन–

बटिया मोनोस्पर्म (लाक्षारु) अथर्ववेद में दर्ज है। महाभारत में यह भी उल्लेख किया गया है कि कौरवों ने लाक्षागृह को आग लगाकर पांडवों को शारीरिक रूप से खत्म करने के मकसद से अत्यधिक ज्वलनशील लाखगृह (लाख घर) का निर्माण किया था। कच्चे लाख उत्पादन की स्थिति : भारत 20,000 लाख टन के वार्षिक उत्पादन के साथ, कच्चे लाख के उत्पादन के मामले में दुनिया भर में अग्रणी लाख उत्पादक है। दुनिया के कुल उत्पादन का लगभग 80 प्रतिशत भारत में है और इसका 75 प्रतिशत मुख्य रूप से संसाधित और अर्ध–संसाधित रूपों में सौ से अधिक देशों को निर्यात किया जाता है। भारत के बाद, थाईलैंड में लाख का उत्पादन अधिक होता है। इनके साथ–साथ इंडोनेशिया, चीन, म्यांमार, फिलीपींस, वियतनाम और कंबोडिया आदि के कुछ हिस्सों में भी लाख का उत्पादन किया जाता है। भारत में, मुख्य रूप से झारखंड राज्य के छोटा नागपुर क्षेत्र, छत्तीसगढ़ राज्य, मध्य प्रदेश , महाराष्ट्र ,ओडिशा पश्चिम बंगाल, और उत्तर प्रदेश में लाख उत्पादन होता है। बढ़ते राज्यों के अलावा, झारखंड राज्य पहले स्थान पर है, इसके बाद छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और ओडिशा हैं और इन पांच राज्यों का राष्ट्रीय उत्पादन में योगदान क्रमशः 53%, 17%, 12%, 8% और 3% है। राष्ट्रीय लाख उत्पादन का लगभग 93% उत्पादन इन 5 राज्यों से ही होता है। लाख उत्पादन के लिए पौधे व उनकी उपयुक्तता जिन पौधों पर लाख का कीड़ा पलता है उन्हें पोषक वृक्ष कहते हैं लाख उत्पादन के लिए गर्म व अल्पादरा क्षेत्र प्रयुक्त होते हैं परंतु क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में लाख के पोसी पौधों का होना

आवश्यक है ताकि मौसम के अनुरूप उन पर लाख के कीड़े स्थापित किया जा सके कुसुम वृक्षों पर पलने वाले कुसमी लाख तथा पलाश पीपल वर गोट व अन्य पोषक वृक्षों पर पलने वाले रंगिणी लाख कहलाती है कुसमी लाख कुसुम के अलावा खैर बर बलिया व गलवांग पर भी पाल जाती है रंगिणी लाख कुसमी की तुलना में निम्न कोटि की होती है लाख की प्रमुख किस्म तथा उनके पोषक वृक्ष निम्न तालिका में दिए गए हैं।

लाख की किस्म	फसलचक्र	वीहन लाख का संचरण	पोषक वृक्ष	फसल कटान
रंगीनी	कटकी	जुलाई	पलाश	अक्टूबर नवम्बर
रंगीनी	बैसाखी	अक्टूबर	पलाश घोंट	जुलाई
कुसमी	अगहनी	जून जुलाई	कुसुमस मीलता, बेर	ज्नवरी फरवरी
कुसमी	जठकी	जनवरी फरवरी	कुसुम	जून जुलाई

लाख उत्पादन

कुसुम के वृक्षों पर पलने वाली हल्के रंग की लाख की किस्म कुसमी कहलाती है कुसमी के अलावा इस किस्म के कीड़े खैर बलिया गर्ल वांग वाबीर पर भी पल जाते हैं उस मिला की फसल 6:00 से 6:00 महीने में पकती है अधिक लाल रंग की लाख पैदा करने वाले कीड़े की किस्म रंगीली कहलाती है यह कुसमी की अपेक्षा निम्न कोटि की होती है यह पलाश पीपल बेलघाट आदि पोषक वृक्षों पर पलती है इसकी अगहनी तथा आठवी किस में कक्षा आठ से नौ व तीन से चार माह में पकती हैं लाख उत्पादन के लिए चयनित क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में लाख के पोषक वृक्षों का होना आवश्यक होता है उचित स्थानों पर इन पौधों का रोपण भी किया जा सकता है कीड़ों की शाखाएं भ्रूण लाख को नई काफी शाखाओं पर जुलाई से अक्टूबर तक स्थापित किया जा सकता है कीड़ों के निकलने से 7 दिन के अंदर ही लाख की दाल का उत्पादन शुरू हो जाता है भारत में लाख उत्पादन क्षेत्रों से मात्रा भी से 20–25 % लाख के पेड़ों का ही उपयोग किया जा रहा है

लाख उत्पादन के कार्य

अधिक उत्पादन हेतु पोषक वृक्षों की काट–छाट नयी और रसदार शाखायें लाख के कीड़ों के भोजन के लिये उपयुक्त होती है। इसलिये समय–समय पर पोषक वृक्षों की काट छाट आवश्यक होती है। छटाई से पुरानी टहनियों को काटकर अधिक नयी और मुलायम टहनिया प्राप्त की जाती है। छटाई हमेशा हल्की करनी चाहिये सामान्यत 25 सेमी (अगूठे से अधिक व्यास से अधिक) शाखाओं की छटाई नहीं करनी चाहिये। अधिक छोटी शाखाओं (जिनका व्यास 125 सेमी से कम हो) को उत्पत्ति के स्थान से काट देना चाहिये। रंगीनी लाख हेतु पलाश के वृक्ष छटाई के 6 महीने उपरान्त तथा कुसुमी लाख हेतु कुसुम के वृक्ष एक–डेढ़ वर्ष बाद अच्छी लाख की फसल प्राप्त करने हेतु योग्य होते हैं। कुसुम की छटाई जनवरी–फरवरी और जून–जुलाई में की जाती हैं तथा पलाश व बेर की छटाई फरवरी से अप्रैल माह में की जाती हैं।

पोषक वृक्षों की काट छांट के लाभ

अच्छी स्वस्थ तथा रस से भरी कोमल शाखाओं की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता को सुनिश्चित करना जिस पर लाख उत्पादन किया जा सके।

- ❖ नई कोपलों को बढ़ावा देने से पौधों की क्षमता को बनाए रखना।
- ❖ मृत अस्वस्थ तथा टूटी शाखाओं को हटाना।

नई फसल प्राप्त करने के लिए कीडों को पोषक पौधों पर स्थापित करना

कृत्रिम संचरण द्वारा बीहन लाख को नयी–नयी पोषक पौधों पर सुतली से बाध दिया जाता है। 1 मीटर बीज लाख (ब्रूड लाख) 25 मीटर टहनियों के लिये पर्याप्त होती है वृक्ष पर बीहन लाख को इस तरह से बाधा जाना चाहिए कि उससे निकलने वाले लाख पर बडल आस–पास की टहनियों पर सप्ताह से अधिक वृक्ष पर नहीं छोड़ना चाहिए। अधिक समय तक रहने से लाख के शत्रु कीटों की सम्भावना बढ़ जाती है। प्रयोग किए जा चुकी कीड़ों की शाखाओं को हटाना पुरानी लाख को वृक्ष पर छोड़ देने से उसमे कीडे निकलकर वृक्षी की डाल पर बैठ जाते है इसे अपनाने की सलाह नहीं दी जाती क्योंकि पोषी शाखाये उस स्थान पर कमजोर हो जाती है तथा लाख के शत्रु कीटो के बढ़ने की सम्भावना बढ़ जाती है। इन पुरानी शाखाओं के हटाने से लाख के कीड़ों के परभक्षियों व परजीवियों की रोकथाम भी होती है।

फसल काटने का उचित समय

फसल को पूरी तरह पकने से पहले नहीं काटना चाहिये। मादा लाख के कीट आजीवन लाख बनाते रहते हैं। अच्छी लाख पैदावर के लिये कीड़ो के बाहर निकलने के समय तक लाख की फसल को वृक्ष पर ही लगे रहने देना चाहिये। परभक्षी प्रबंधन व कीटनाशकों का छिड़काव यदि आवश्यक हो तो परभक्षी कीटो से बचाव के लिये कीट नाशकों का छिड़काव सावधानी से किया जा सकता है। बूड लाख को एक सप्ताह से अधिक स्टोर नहीं किया जा सकता है और उत्पादन की

दर कम होती है। अन्य कारक जैसे निम्न न्यूनतम समर्थन मूल्य मेजबान वृक्ष की उपलब्धता या अतिरिक्त वृक्षारोपड़ कम मूल्य संवर्धन आदि लाख के उत्पादन को प्रभावित करते हैं। लाख कीट और मेजबान पेड़ो के क्षेत्र भंडार जर्मप्लाज्म बैंक को विकसित करने के लिए बुनियादी ढांचा लाख की खेती के लिए एक चुनौती है। पौधशाला जल प्रबंधन खरपतवार नियंत्रण नर्सरी बढ़ाने और रोपाई के साथ–साथ मेजबान पौधों की छटाई बूड लाख कीटो का टीकाकरण नियंत्रण के उपाय और कटाई आदि में हितधारको (लाभार्थियो/किसानों/कृषकों का उचित प्रशिक्षण भूमि और पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन के इस सतत सर्वोत्तम अभ्यास को उचित रूप से अपनाने के लिए आवश्यक है।

लाख उत्पादन से लाभ

वनों के आसपास रहने वाले समुदायों के लिए समर्पित आय का साधन समुदाय आधारित सबंधित भूमिव पारितंत्र प्रबंधन को बढ़ावा, तथा स्थानीय विविधता संरक्षण बढ़ा लाख संवर्धन का अर्थशास्त्र एक उच्च संभावित आय सृजन के साथ लाख एक उच्च पारिश्रमिक फसल है। 15 मेजबान पेड़ों के साथ लाख उत्पादक का शुद्ध रिटर्न लगभग 15000 रुपये सालाना जाता है।